भजन

तर्ज–पानी रे पानी तेरा रंग कैसा

पिया रे पिया तेरा खेल कैसा,
इसको मिटा दो लागे विष जैसा

1– लाड लडाया ऐसा तुमने झूठा खेल दिखाया
झूठे में झूठी हो गई उसमें दिल भरमाया
भरमों में पड़ गई यह कैसा
2– देखी दुनिया देखे रिश्ते देखे झूठे नाते सारे
भाई बन्धु कुटुम्ब कबीला मतलब के है सारे
मोह में मैं फंस गई रंग कैसा
3– रूहें बेनियाज थीं बीच बका बारह हजार
जानी न हक अर्श की साहेबियां अपार
तिलस्म में मैं फंस गई ये ढंग कैसा
4– चितवन द्वारा ध्यान लगाओ
सुख निजघर का मिलता
पा न सके हैं त्रैगुण जिसको
उस घर का सुख मिलता
सुख ही दिखा दो ये दुख कैसा